कामायनी की वैश्विक चेतना की प्रासंगिकता

डॉ. अखिलेश कुमार त्रिपाठी*

drakhileshtripathi@gmail.com

सारांश :

कामायनी विश्व महाकाव्य है। इसके कथानक का संबंध विश्व मानवता से है। कामायनी का मूल लक्ष्य है व्यक्ति के साथ विश्व का कल्याण। आज का विश्व अनेक संकटों से गुजर रहा है। अनेक देश युद्धरत हैं अनेक देशों में भुखमरी एवं अशान्ति है। कामायनी की वैश्विक चेतना आज के अशांत विश्व को शान्ति प्रदान कर सकती है। इस शोधपत्र में कामायनी के उन अंशों पर विशेष विचार किया गया है जो आज के अशान्त विश्व को शान्ति का पाठ पढ़ा ही नहीं सिखा सकते हैं।

बीज शब्द- *कामायनी, वैश्विक चेतना, वसुधैव कुटुम्बकम्, मनु, श्रद्धा, विश्वकल्याण*

भारत प्राचीनकाल से ही वैश्विक चेतना का पक्षधर रहा है। भारतीय संसद (पुराने) के केन्द्रीय कक्ष के द्वार के ऊपर विष्णुशर्मा के पंचतंत्र (5-38) का यह श्लोक उद्धृत है कि-

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।[1]

यह निज, यह पर सोचना यह संकुचित विचार है, उदाराशयों के लिए अखिल विश्व परिवार है।।

उदात्त चिन्तक विश्व को एक परिवार मानते हैं। प्राचीन भारत के अनेक ग्रन्थों में इस प्रकार के भाव मिलते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि 'इन्द्र को बढ़ाते हुए, दिव्य गुणों से अलंकृत करते हुए, तत्परता के साथ कर्म करते हुए, अदानशीलता को, ईर्ष्या, द्वेष, द्रोह की भावनाओं को, शत्रुओं को परे हटाते, हराते हुए सम्पूर्ण विश्व को, आर्य बनाते हुए हम सर्वत्र विचरें।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।।[2]

इस मंत्र में उल्लिखित भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें मानव मात्र की भावनात्मक संवेदनाएँ झलकती हैं। सभी के विकास से विश्व का विकास होगा। स्व विकास की यात्रा सर्वस्व विकास के पावन क्षेत्र में सफल

* **असिसटेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शिब्ली नेशनल पी. जी. कॉलेज, आजमगढ़।**

होती है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने विश्व को सन्देश दिया था कि सभी सुखी हों। सभी रोग रहित हों। सभी का कल्याण हो। कोई भी दुःखी न रहे।[3]

भारत विश्व-परिवार का समर्थक सदैव से रहा है, आज भी है, कल भी रहेगा। वैश्विक चेतना या विश्व बन्धुत्व की भावना हमें विरासत में मिली है, हमें इस पर गर्व करना ही है। भारत की वैश्विक चेतना एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य तथा सर्व कल्याण की पवित्र भावना पर आधारित है। हमारी तो अति प्राचीन मान्यता है कि 'हे पृथ्वी, जो तुम्हारा मध्य भाग है, और जो नाभि भाग है, जो शक्तियाँ तुम्हारे शरीर से उत्पन्न हुई है, हमें प्रतिष्ठित करो, उन्हें हमारी ओर प्रवाहित करो। पृथ्वी माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ, पर्जन्य देव हमें पार करें। यहाँ ऋषि पृथ्वी को माता तथा स्वयं को उसका पुत्र कह रहा है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को ही रेखांकित करते हुए कामायनी कहती है कि 'मनु! विधाता का मंगलमय वरदान सुनो जिससे प्रतिध्वनित हो रहा है कि-''शक्तिशाली हो, विजयी बनो'' विश्व में यह जयगान गूँज रहा है।

और यह क्या तुम सुनते नहीं, विधाता का मंगल वरदान।
'शक्तिशाली हो विजयी बनो' विश्व में गूँज रहा जयगान।।[5]

प्रसाद जी ने कामायनी के आमुख के अंत में लिखा है कि 'मनु, श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक, अस्तित्व रखते हुए, सांकेतिक अर्थ की अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। मनु अर्थात् दोनों के पक्ष, हृदय और मस्तिष्क का संबंध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है। मन के दो पक्ष सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों होते हैं।' मनु की प्रारम्भिक विश्वचेतना स्वार्थपरक और नकारात्मक ही दिखती है, यह अलग बात है कि वे कालांतर में श्रद्धा के सम्पर्क में उसके आचरण व्यवहार से प्रभावित होकर हृदय परिवर्तन कर लेते हैं, उनकी विश्वचेतना सकारात्मक बन जाती है।

वासना सर्ग में मनु की स्वार्थवादी प्रकृति ही परिलक्षित होती है। वे विश्व की सारी सुन्दर वस्तुओं को अपने उपभोग का विषय मानते हैं। उन्होंने पशुवध-बलि का दारुण कार्य भी किया है। वे कहते हैं कि-

विश्व में जो सरल सुन्दर है विभूति महान।
सभी मेरी हैं, सभी करती रहें प्रतिदान।।[6]

'इस संसार में जितने सुंदर रूप है वे सब मेरे हैं वे मुझे मेरे प्रेम-व्यवहार के बदले प्रतिदान करते रहें। मनु की स्वार्थपरता की सीमा तब टूट जाती है जब वे कर्म सर्ग में कहते हैं सारा संसार हमारे उपभोग की वस्तु है, मेरे जीवन के दोनों तटों पर ''वासना'' की धारा बहती रहे।

आकर्षण से भरा विश्व यह केवल भोग्य हमारा।
जीवन के दोनों कूलों में बहे वासना धारा।।[7]

श्रद्धा मनु की मानवता को धिक्कार रही है क्योंकि उनका मन पशुबलि से नहीं भरा अभी उनके मन में नाना प्रकार की भोग लिप्साएँ बलवती हो रही हैं। श्रद्धा के शब्दों में-

मनु! क्या यही तुम्हारी होगी उज्ज्वल नव मानवता।
जिसमें सब कुछ ले लेना हो हंत बची क्या शवता ?[8]

प्रसाद ने इड़ा सर्ग में इड़ा के भाल-मस्तक के लिए लिखा है कि 'वह विश्व मुकुट सा उज्ज्वलतम शशिखंड' के समान था। इसी सर्ग में जब इड़ा तथा मनु से वार्तालाप प्रारम्भ होता है तो मनु स्वयं को ऐसा 'विश्व पथिक' बतलाते हैं जो क्लेश सह रहा है। मनु वैश्विक चेतना की अनेक बार चर्चा करते हैं। वे इड़ा सर्ग में 'विश्व कुहर में इन्द्रजाल' का उल्लेख करते हुए सागर की भीषण तरंगों की उपमा महाकाल से देते हैं। इस स्थल पर वे शैव दर्शन की पृष्ठभूमि की मीमांसा करते हैं। मनु का घृणित रूप स्वप्न सर्ग में मिलता है। मनु ने इड़ा के साथ 'नर पशु' जैसा व्यवहार किया और इस अपराध से 'वसुधा जैसे काँप उठी'। उनका व्यक्तिगत कुकृत्य मानवता के माथे का कलंक बना। संघर्ष सर्ग में मनु की वैश्विक चेतना विचार प्रधान दिखलायी पड़ती है। मनु सोचते हैं कि 'मेरी तो क्या, यह सम्पूर्ण जगत् भी इतना परिवर्तनशील है कि यह किसी भी एक नियम में बंध कर नहीं रहता। इसमें सूर्य, चन्द्रमा तथा तारे सभी स्वतंत्रता पूर्वक नित्य अपने अपने रूप बदलते रहते हैं-

विश्व एक बंधन-विहीन परिवर्तन तो है,
इसकी गति में रवि-शशि-तारे ये सब जो है।[9]

आशा सर्ग में प्रसाद हिमालय को 'विश्व-कल्पना' सा कहकर हिमालय की वैश्विक महत्ता का उल्लेख करते हैं। आशा सर्ग में मनु को रात्रि में तारा 'व्यथित विश्व के सात्विक शीतल विंदु' के रूप में दिखलायी पड़ता है। मनु का व्यथित विश्व उनकी व्यक्तिगत वेदना तो है ही साथ ही वह वैश्विक वेदना का भी प्रतीक है। यहीं पर मनु को रात्रि 'विश्वकमल की मृदुल मधुकरी' के रूप में अनुभव हो रही है। कमल सौंदर्य और आशा का संचार करता है। अब, विश्व सौन्दर्य संसार की ओर अग्रसर हो रहा है। प्रलय की विभीषिकाओं की स्मृतियाँ क्षीण हो रही है। श्रद्धा सर्ग में श्रद्धा की सुन्दरता का निदर्शन करते हुए महाकवि ने लिखा कि वह 'विश्व की करुण कामना मूर्ति' है। करुणा ही विश्व प्रेम का आधार है, मानवता का महामंत्र है, वसुधैव कुटुम्बकम् का प्रारम्भ है। इसी सर्ग में श्रद्धा स्वयं के प्रेम को मनु को समर्पित करते हुए कहती है कि 'यह विश्व का उन्मीलन अभिराम' है। सचमुच वैश्विक सौन्दर्य का प्रस्फुटन प्रेम के परिसर से होता है। श्रद्धा को विश्व वेदना की व्यथा चिंतित किये रहती है तभी तो वह 'विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान' कहती है। विश्व से विषमता की पीड़ा हटे तो विश्व सुखमय बने। विश्व की विषमता को दूर करने के लिए श्रद्धा अपनी आंतरिक प्रीति को मनु के समक्ष समर्पित करती है और 'विश्व भर सौरभ से भर जाय, और सुमन के खेलो सुन्दर खेल' कह कर प्रीति-विश्व बसाने का निमंत्रण देती है। कामायनी की विश्वचेतना कर्मयोग की पक्षधर है। श्रद्धा सर्ग में श्रद्धा हतोत्साहित निराश मनु के मन में आशा का संचार करते हुए कहती है कि ''शक्तिशाली हो, विजयी बनो, विश्व में गूँज रहा जय गान'' सचमुच यहीं से विकसित विश्वचेतना आकार ग्रहण करने लगती है। इतना ही नहीं उसका आह्वान है कि ''विश्व की दुर्बलता बल बने'' विश्व में यदि कहीं दुर्बलता दिखायी पड़े तो उसे हटाकर बल की स्थापना की जाय। दूसरे शब्दों में हताशा को आशा में परिवर्तित किया जाय। कामायनी की विश्वचेतना आतंक के साम्राज्य का विनाश चाहती है। कर्म सर्ग में श्रद्धा कहती है कि 'विश्व विपुल आतंक त्रस्त है अपने ताप विषम से। इसी

सर्ग में श्रद्धा आकाश को शिव के रूप में कल्पित करते हुए कहती है 'अखिल विश्व का विष पीते हो, सृष्टि जियेगी फिर से।'' शिव ने विषपान कर विश्व को विनाश से बचा लिया। आकाश की नीलिमा भी तो विष के वर्ण (समान) की है। आकाश भी नीलिमा रूपी विष को धारण करने के बावजूद भी वह अनेक प्रकाश पुंजों के माध्यम से विश्व की वेदना का समापन करता है। कामायनी की विश्व चेतना का एक मनोहरतम रूप तब सामने आता है जब वह कर्म सर्ग में कहती है कि 'औरों को हँसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ।'[10] कामायनी की विश्वचेतना मात्र मानवों के लिए ही नहीं है वह पशुवध की विरोधी है। ईर्ष्या सर्ग में कहती है कि ''पशु से यदि हम कुछ ऊँचे हैं तो भव, जलनिधि में बने सेतु।''[11] सेतु का काम होता है अगम जलधि, जल से पार करा देना।

श्रद्धा के लिए विश्व एक खेल है, प्रसन्नता प्रदान करने का एक माध्यम है। मनु श्रद्धा के लिए कहते हैं कि-

तुमने हँस हँस मुझे सिखाया विश्व खेल है खेल चलो।
तुमने मिलकर मुझे बताया सबसे करते मेल चलो।।[12]

श्रद्धा का हृदय विशाल है। कामायनी की विश्वचेतना को दर्शन सर्ग में समझा जा सकता है। वह अपने पुत्र मानव से कहती है कि असीम नीले गगन के नीचे यह कितना उदार एवं विस्तृत जगत् फैला हुआ है। मेर घर यही विशाल विश्व है, जिसका द्वार सभी के लिए हरदम खुला हुआ है।

यह विश्व अरे कितना उदार।
मेरा गृह रे उन्मुक्त द्वार।।[13]

विश्व शब्द क्षेत्र-स्थान के लिए प्रयुक्त होता है, किया जा सकता है। कामायनी के दर्शन सर्ग में रात्रि के समय के आकाश का वर्णन करते हुए कवि का कथन है कि ''हँसता ऊपर का विश्व मधुर'' यहाँ पर विश्व शब्द उस विश्व चेतना का संकेतक है जहाँ हँसी है, एक प्रफुल्लता और आनंद है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, विश्व का विधान है। दर्शन सर्ग में महाकवि द्वारा कहा गया है कि 'यह विराट् विश्व आंदोलित होकर ऐसा जान पड़ता है कि मानों वह एक बड़े झूले पर झूल रहा हो, क्षण क्षण पर होने वाले परिवर्तन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कोई महाशक्ति एक के पश्चात दूसरा पर्दा खोलती हुई नाना प्रकार के दृश्य बदल बदलकर दिखला रही हो।

यह विश्व झूलता महा दोल।
परिवर्तन का पट रहा खेल।।[14]

रहस्य सर्ग में विश्व, क्षेत्र के अर्थ में आया है। यहाँ 'त्रिदिक् विश्व' का तात्पर्य तीन दिशाएँ हैं। मनु को तीन दिशाओं में तीन गोले दिखायी पड़ते हैं जो अलग अलग होने के कारण स्वर्ग, पृथ्वी एवं पाताल नामक लोगों के प्रतिनिधि प्रतीत होते हैं।

त्रिदिक विश्व, आलोक बिंदु, भी तीन दिखायी पड़े अलग वे।

त्रिभुवन के प्रतिनिधि थे मानों वे अनमिल थे किंतु सजग थे।।[15]

श्रद्धा ''मनोमय विश्व''[16] का भी उल्लेख करती है जहाँ माया का राज्य है, आसक्ति भाव की उपासना है। कामायनी की विश्वचेतना की उच्चतम उपलब्धि आनंद सर्ग में है। कामायनी की विश्वचेतना 'जगती का पावन साधना प्रदेश' है जहाँ 'वरदान बने फिर उसके आँसू करते जग मंगल हैं।' 'कामायनी जगत की मंगल कामना अकेली' अर्थात कामायनी विश्व की एकमात्र मूर्तिमान् मंगल कामना है। मानसरोवर तट की प्रकाशवती वन-बेली है। वह पुलकित विश्व चेतना है, पूर्ण काम की प्रतिमा है।

वह कामायनी जगत की मंगल कामना अकेली।
थी ज्योतिष्मती प्रफुल्लित मानस तट की वन-बेली।।
वह विश्व चेतना पुलकित थी पूर्ण काम की प्रतिमा।
जैसे गंभीर महाह्रद हो भरा विमल जल महिमा।।[17]

कामायनी की वैश्विकचेतना विश्व विकास का आधार है। कामायनी का लक्ष्य ही है विश्व बंधुत्व और लोक मंगल। आज के अशांत जगत में कामायनी की वैश्विक चेतना की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है।

निष्कर्ष:

जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी की वैश्विक चेतना आज के सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक संकटों से ग्रस्त विश्व के लिए अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है। यह महाकाव्य न केवल एक व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा है, बल्कि समूची मानव जाति के कल्याण की कामना भी करता है। मनु, श्रद्धा और इड़ा जैसे प्रतीक पात्रों के माध्यम से प्रसाद ने मानव हृदय के दोनों पक्षों – स्वार्थ और त्याग, भोग और योग, अज्ञान और विवेक – को उजागर किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आत्मविकास का मार्ग विश्वविकास से होकर जाता है।

कामायनी की यह वैश्विक चेतना "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उस प्राचीन भारतीय अवधारणा का विस्तार है, जिसमें समस्त पृथ्वी को एक परिवार माना गया है। श्रद्धा के चरित्र के माध्यम से करुणा, सहिष्णुता, प्रेम और आशा जैसे गुणों का जो चित्र प्रस्तुत हुआ है, वह केवल भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए पथप्रदर्शक है। श्रद्धा द्वारा निराश मनु में आशा का संचार, आतंक की समाप्ति का संकल्प, और प्रेम से युक्त विश्व निर्माण का संकल्प – ये सब वैश्विक सौहार्द की प्रेरक व्याख्याएँ हैं।

मनु की आत्मपरक चेतना जब श्रद्धा के प्रभाव से सार्वभौमिक चेतना में रूपांतरित होती है, तो वह समकालीन विश्व को यह सन्देश देती है कि आत्मकेन्द्रित जीवन से बाहर निकलकर ही शांति, सहअस्तित्व और कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। कामायनी का दर्शन यह स्वीकार करता है कि परिवर्तन शाश्वत है और विश्व एक ऐसा झूला है जिसमें जीवन की गति निरंतर चलती रहती है। इस परिवर्तनशील संसार में प्रेम, करुणा और सहयोग की भावना ही स्थायित्व का आधार बन सकती है।

इस प्रकार, कामायनी की विश्वचेतना केवल साहित्यिक विषय नहीं, बल्कि आज के संदर्भ में एक सांस्कृतिक और नैतिक दार्शनिक संकल्पना है, जो मानवता को भटकाव से दिशा, संकट से समाधान और असंतुलन से संतुलन की ओर ले जाने का सामर्थ्य रखती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कामायनी की वैश्विक चेतना आज के विश्व में शांति, सह-अस्तित्व, मानवीयता और नैतिक पुनर्जागरण की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

संदर्भ-

1. विष्णुशर्मा. (लगभग 200 ई.पू.). *पंचतंत्र* (कथा 5–38). भारत: नीति ग्रंथ.
2. ऋषि. (प्राचीन). *ऋग्वेद* (मण्डल 9, सूक्त 36, मंत्र 5). भारतीय वैदिक संहिता.
3. परंपरागत. (प्राचीन). *सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः...* [वैदिक प्रार्थना मंत्र]. भारतीय सांस्कृतिक परंपरा.
4. अज्ञात ऋषि. (प्राचीन). *अथर्ववेद* (पृथ्वी सूक्त, सूक्त 12). भारतीय वैदिक ग्रंथ.
5. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (श्रद्धा सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
6. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (वासना सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (कर्म सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
8. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (कर्म सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
9. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (संघर्ष सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
10. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (कर्म सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
11. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (ईर्ष्या सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (निर्वेद सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
13. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (दर्शन सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
14. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (दर्शन सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
15. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (रहस्य सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
16. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (रहस्य सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
17. प्रसाद, जयशंकर. (1950). *कामायनी* (आनंद सर्ग). दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.